Impact Factor (SJIF): 4.714 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 04/December/2022 IJRAW: 2023; 2(1):26-28 Accepted: 06/January/2023

प्राचीन भारत में खरोष्ठी लिपि की उत्पत्ती के संदर्भ में विवेचना

*[1]डॉ0 अनिल कुमार यादव

*[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, संस्कृति, पुरातत्व विभाग पी0जी0 कालेज, पट्टी, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्राचीन भारत में खरोष्ठी लिपि की उत्पत्ती कैसे हुई? समय के साथ उत्तरोत्तर खरोष्ठी लिपि का विकास होता गया। मौर्यकाल, शुंगकाल, सातवाहनकाल, कुषाणकाल और गुप्तकाल में खरोष्ठी लिपि का अत्यधिक विकास हुआ। इसकी उत्पत्ती भारत में हुई और नवीन शोधार्थियों हेतु इस विषय की समझ को विकसित करने का प्रयास किया गया है ताकि भविष्य में छात्र–छात्राओं को खरोष्ठी लिपि को समझने में सहायता प्राप्त हो सके।

मूल शब्दः खरोष्ठी, लिपि, ब्यूलर, धम्मपद, अभिलेख।

प्रस्तावना

अशोक के अभिलेख लगभग सम्पूर्ण भारतवर्ष में पाये जाते हैं जो ब्राह्मी लिपि में लिखे गये हैं। इसमें से कुछ जो भारत के उत्तरी–पश्चिमी सीमा प्रदेश में मिले हैं, वे इस लिपि से भिन्न एक दूसरी लिपि में खोदे गये जो दाहिने से बायें की ओर लिखी गयी हैं। इस लिपि को पुरातत्त्वविद् ब्यूलर ने खरोष्ठी लिपि के नाम से सम्बोधित किया है। इसका प्रयोग अशोक के पहले भारतीय अभिलेखों के इतिहास में दिखाई नहीं पड़ता। इसलिए बड़ी सरलतापूर्वक यह धारणा व्यक्त की जा सकती है कि अशोक के अभिलेखों में ही सबसे पहले खरोष्ठी लिपि के प्रयोग का प्रचलन मिलता है। इसके साथ ही इस लिपि की यह अपनी विशेषता है कि इसका विकास तथा विस्तार हम पश्चिमी देशों, यथा–अफगानिस्तान, मध्य एशिया आदि में ही पाते हैं जबकि शेष भारतीय लिपियों का प्रयोग केवल भारतीय सीमा तक ही सीमित रहा तथा इनका प्रसार भी यहीं हुआ । पर खरोष्ठी लिपि का प्रयोग बहुत अल्प काल तक सीमित क्षेत्र में ही दिखाई पड़ता है जबकि ब्राह्मी का इतिहास एक लम्बे काल का इतिहास है तथा इसका प्रयोग बहुत व्यापक रूप में हुआ है। खरोष्ठी नाम भी भारतीय बोलचाल की भाषा में बड़ा विचित्र लगता है। इसलिए सहसा यह कुतूहल जाग्रत हो जाता है कि इस लिपि विशेष का नाम खरोष्ठी क्यों हुआ तथा इसका उत्पत्ती कहाँ हुई थी?

खरोष्ठी का नाम विभिन्न भारतीय तथा विदेशी ग्रन्थों में पाया जाता है। चीनी विश्वकोश, 'फा–वान–शु–लिन' में खरोष्ठी नाम का उल्लेख मिलता है। भारतीय बौद्ध ग्रन्थ "ललित विस्तर' में भी, जहाँ लिपियों की सूची दी गयी है, खरोष्ठी लिपि का उल्लेख है। इसका नाम सातवीं शताब्दी तक चीनी ग्रन्थों में प्रयोग किया गया है। दायें से बायें लिखी जाने वाली भारतीय सीमा की इस लिपि को बैक्ट्रियन, काबुली, गान्धारी, बैक्ट्रोपाली, एरियानो–पाली आदि भारतीय सीमा प्रदेश के स्थानों के नाम के साथ जोड़कर सम्बोधित किया जाता था। किन्तु जार्ज ब्यूलर ने सर्वप्रथम इसे इस नाम विशेष से सम्बोधित किया था[1]।

नामकरण

खरोष्ठी के नामकरण के सम्बन्ध में साधारणतया अनेक धारणाएँ विद्वत्–समाज में प्रचलित हैं। इस सम्बन्ध में चीनी विश्वकोश 'फा–वान–शू–लिन' यह प्रतिपादित करता है कि चूँकि इस लिपि का अन्वेषक खरोष्ठ (खर–ओष्ठ) अर्थात गदहे की तरह होंठ वाला व्यक्ति था इसी से इसे खरोष्ठी कहा गया। दूसरे वर्ग के विचारकों–ने यह मत दिया है कि खरोष्ठ एक जंगली जाति थी। वही इन अक्षरों का प्रयोग करती थी। इसलिए इसको अन्वेषक के नाम के पीछे, खरोष्ठी कहा गया। एक वर्ग के अनुसार खरोष्ठी ईरानी शब्द खरपोष्ट से बना है। खरपोष्ट से अभिप्राय है गदहे की खाल से। संभवतः यह गदहे के चमड़े पर पहले लिखा जाता होगा इसी से इसका नाम खरपोष्ट के आधार पर खरोष्ठी पड़ा होगा। यह भी सम्भावना है कि गदहे के सूखे चमड़े की तरह चूँकि इसकी आकृति टेढ़ी–मेढ़ी होती थी इसी से इसको खरोष्ठी कहा गया।[2] इस प्रकार के एक नहीं अनेक विचार खरोष्ठी लिपि के नामकरण के समबन्ध में प्रतिपादित किए गये हैं। ये विचार कहाँ तक सत्य है नहीं कहा जा सकता। पर डॉ० राजबली पाण्डेय की यह धारणा सत्य के अधिक समीप प्रतीत होती है कि पहले यह नाम व्यंग्य में इसके लिए प्रयुक्त किया जाता होगा पीछे चलकर यही इसका प्रचलित नाम स्वीकार कर लिया गया होगा क्योंकि इसका कोई–दूसरा नाम किसी भी अन्य आधार से ज्ञात नहीं होता।

प्रयोग काल एवं क्षेत्र

पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार खरोष्ठी का प्रयोग अशोक के समय से हमको मिलता है। जैसा ऊपर वर्णित है, पश्चिमोत्तर सीमा पर अशोक के कुछ अभिलेख इस लिपि में पाये गये हैं। इस समय से

*Corresponding Author: डॉ0 अनिल कुमार यादव

लेकर बाद के कुषाण शासकों के समय (चौथी शताब्दी) तक इस लिपि के अभिलेख मुद्रालेख स्फुट रूप से मिलते हैं। इसके बाद भारतीय सीमा में इस लिपि के प्रयोग का कोई भी पुरातात्विक साक्ष्य प्राप्त नहीं होता है किन्तु इसके बाद इस लिपि के प्रचलन का लोप संसार से हो गया ऐसा भी नहीं है। इसके बाद भी चीनी तुर्किस्तान में कुछ और समंय तक इसका प्रचलन था। जैसा ऊपर कहा गया है यह लिपि पूर्वी भारत तथा मंध्यदेश तक भी अपने प्रचलन के समय नहीं पहुँच सकी थी। इसका मूल विस्तार क्षेत्र था भारत की तत्कालीन पश्चिमोत्तर सीमां जो अब पश्चिमी पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान के नाम से जानी जाती है। चीनी तुर्किस्तान तक इसके प्रसार के चिह्न दिखाई पड़ते हैं। भारत के भीतरी भाग में पंजाब, मथुरा तथा सिद्धपुर से भी खरोष्ठी के लेख उपलब्ध हुए हैं। किन्तु न उसके आगे मिले हैं और न व्यापक रूप से ही वहाँ पाये गये हैं। इसका अंकन सिक्कों, प्रस्तर खण्डों, बर्तनों पर विशेष रूप से हुआ है। यों तो खोतान से प्राप्त धम्मपद पुस्तक[3] की एक प्रति भी इस लिपि में मिली है जो भोजपत्र पर लिखी हुई है। डॉ ब्यूलर का यह अनुमान है कि यह ग्रन्थ कुषाण शासन काल में गांधार में लिखा गया होगा।

यही कारण है कि यह अल्पायु लिपि जो अल्प क्षेत्रीय भी थी सहसा विनष्ट हो गई। इसके बाद इसका कोई चिह्न यहाँ छूटा हुआ नहीं मिलता है, साथ ही इसके विविध रूप भी ब्राह्मी की तरह नहीं दिखते जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस लिपि का विकास नहीं हुआ। यह अपने मूलरूप में ही समाप्त हो गई। ब्यूलर ने इसके समाप्त होने का एक और तर्क दिया है कि यह साहित्यिक लिपि नहीं थी। इसका प्रयोग समाज में किसी प्रयोजन के लिए ही की जाती थी। किन्तु इस मत के विरोध में डॉ0 ठाकुर प्रसाद वर्मा का तर्क है कि यद्यपि इसका प्रयोग प्राकृत भाषा के अभिव्यक्ति के लिए किया जाता था, फिर भी संस्कृत साहित्य को लिखने के लिए इसका उपयोग किया जा सकता था। यह आरोप इस पर अवश्य लगाया जा सकता है कि ब्राह्मी के साथ प्रयोग होने वाली यह लिपि अत्यन्त ही जटिल एवं दुरूह थी जिससे साधारण प्रयोग में इंसे लाना कठिन लगता है।

उद्धव के सिद्धान्त इस लिपि का उद्धव कहाँ हुआ ? यह प्रत्येक पुरालिपि के विद्यार्थी के लिए समस्या बना हुआ है। इस समस्या पर दो पक्षों में विचार किया गया है। विचारकों का एक वर्ग इसके विदेशी उद्‌भव पर जहाँ बल देता है वहीं दूसरा वर्ग इसके भारतीय उद्‌भव की दुहाई देता है। इसलिये यहाँ क्रम से दोनों पक्षों का अध्ययन करना आवश्यक है।–

अ. विदेशी उद्‌भव का सिद्धान्त

ब. भारतीय उद्‌भव का सिद्धान्त

(अ) विदेशी उद्‌भव का सिद्धान्त

आज भी प्रायः सभी भारतीय लिपियाँ बाएँ से दायें लिखी जाती हैं। किन्तु भांरत में अशोक के समय प्रयोग होने वाली ब्राह्मी लिपि जहाँ बाएँ से लिखी जाती थी वहीं खरोष्ठी दाएँ से बाएँ की ओर लिखी जाती थी जिस प्रकार उत्तरी सेमेटिक शाखा की अरमेइक लिपि। कुछ अरमेइक अक्षरों की तरह खरोष्ठी अक्षर भी दिखते हैं। अतः इन प्रत्यक्ष उदाहरणों के आधार पर जार्ज ब्यूलर तथा दानी महोदय ने इसके विदेशी उत्पत्ति की बात सिद्ध करने की वकालत की है। इसकी पुष्टि में इन्होंने निम्नांकित तर्क दिये हैं–

1. ईरानी आक्रमण के बाद खरोष्ठी लिपि का प्रयोग पश्चिमी भाग में पाया जाता है।
2. इसका प्रयोग भारत के उसी क्षेत्र में हम पाते हैं जहाँ ईरानी आधिपत्य छठी शताब्दी ई0पू0 के उत्तरार्द्ध से चौथी शताब्दी ई०पू० तक़ विद्यमान था।
3. पारसीक शासकों ने इस लिपि का उपयोग अपनी प्रशासनिक व्यवस्था के लिये किया था।
4. खरोष्ठी और सेमेटिक लिपि के अक्षरों में बहुत कुछ समता दिखती है, जैसे–दीर्घ स्वरों का अभाव।
5. अरेमयिक लिपि की तरह यह दायें से बायें की ओर लिखी जाती है।
6. खरोष्ठी के अभिलेखों में कुछ ईरानी शब्द प्रयुक्त हैं, जैसे–लेखन या लेख के लिए 'दिपि' शब्द का उल्लेखे। ईरानी और भारतीय दफ्तरों में पत्र–व्यवहार के लिए अरमेइक अक्षरों का व्यवहार शुरू हुआ। बाद में पुरानी ब्राह्मी के अनुसार इस लिपि में कुछ क्रम का परिवर्तन प्रारम्भ हुआ जिस क्रम में खरोष्ठी लिपि निकली।

किन्तु ये सभी तर्क डॉ–पाण्डेय द्वारा खण्डित किए जा चुके हैं। पहले तर्क के सम्बन्ध में ज्ञातव्य है कि पर्शियन सिग्लास में खरोष्ठी अक्षरों का लिखा जाना इस.बात को–सिद्ध करता है कि ईरानी आक्रमण के पहले खरोष्ठी एक विकसित लिपि के रूप में यहाँ विद्यमान थी। दूसरे हमको एक भी अभिलेख ईरानी शासकों का उस क्षेत्र से उपलब्ध नहीं होता जो भारत में उनके अधीन था। तीसरे डॉ० मजुमदार के अनुसार यह संदिग्ध है कि भारत कभी भी ईरानी प्रशासन में रहा हो। यदि रहा होता तो जैसा ऊपर कहा गया है कोई–न–कोई ईरानी प्रशासनिक आज्ञा यहाँ अवश्य प्राप्त होती। चौथे खरोष्ठी में दीर्घ स्वरों के अभाव का कारण यही रहा होगा कि इसका आविष्कार प्राप्त भाषा में लिखने के लिए किया गया हो, जिसमें दीर्घ स्वर स्वतः नहीं मिलते। यह तो सत्य है कि यह दाएँ से बाएँ की ओर लिखी जाती है किन्तु इसका मतलब यह नहीं कि यह अरमेइक लिपि से ही मिलती है जो दाएँ से बाएँ लिखी जाती है। अरमेइंक लिपि का ही केवल एक मात्र एकाधिकार नहीं है कि अक्षर दाएँ से बाएँ उसी में लिखे जायं। 'दिपि' को ईरानी शब्द स्वीकार करना ब्यूलर की एक महान भूल प्रतीत होती है। संस्कृत में 'दिप' शब्द का प्रयोग बहुलता से पाया जाता है तथा विभिन्न रूपों में। इसका अर्थ है 'चमकाना' चमकते हुए अक्षरों के लिए दीप या दिपि शब्द का प्रयोग पूर्ण स्वाभाविक है। अंतिम तर्क तो स्वयं ही स्पष्ट करता है कि यह भारतीय उद्‌भव की भाषा है। साथ ही यह कल्पना है कि ईरानी दफ्तरों से पत्र व्यवहार के लिये इसका प्रयोग किया जाता था । ब्राह्मी की भारतीय उत्पत्ति सिद्ध हो चुकी है फिर उसकी तरह इसकी विदेशी उत्पत्ति की बात स्वतः अपने में ही निराधार है। अतः यह सिद्ध करना कि खरोष्ठी का अरमेइक लिपि से उद्‌भव हुआ है, एक मात्र श्रमसाध्य प्रयास है। भारतीय अरमेइक लिपि से परिचित थे जो ईरानी सम्पर्क के द्वारा भारतीयों को ज्ञांत थी। इसका स्पष्ट प्रमाण अशोक के अरमेइक लिपि के दो अभिलेख हैं जो तक्षशिला तथा गांधार (अफगानिस्तान) से प्राप्त हुए हैं। यह एक ही साथ अरमेइक और खरोष्ठी लिपियों के साथ–साथ प्रयोग एक–दूसरे का उद्‌भव नहीं सिद्ध करती अपितु दोनों का स्वतंत्र लिपि के रूप में विकास होना सिद्ध करती है। यह बात दूसरी है कि इन दोनों लिपियों में कुछ समता रही हों पर यह अस्वाभाविक भी नहीं है। ऐसी समता प्रायः मिलती है।

(ब) भारतीय उद्‌भव का सिद्धान्त

ऊपर के विवेचन से स्पष्ट है कि खरोष्ठी न कोई विदेशी लिपि है अथवा न इस पर कोई विदेशी प्रभाव ही पड़ा है। तो फिर यह पूर्णतया एक भारतीय लिपि है। इस मत की पुष्टि के लिए निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किया जा सकता हैः–

1. खरोष्ठी लिपि के प्रारम्भिक अभिलेख उत्तरी–पश्चिमी भारत में ही पाये गये हैं। पश्चिमी एशिया में इसका एक भी अभिलेख या लिखित प्रमाण नहीं मिला है।
2. ईरानी शासक जिनको खरोंष्ठी के उद्‌भव का स्रोत बताया जाता है उन्होंने कभी भी अरमेइक लिपि का प्रयोग अपने प्रशासनिक कार्यो के लिए नहीं किया।
3. मध्य एशिया में खरोष्ठी लिपि के कुछ अभिलेख तथा लिखित प्रमाण अवश्य मिले हैं। किन्तु यह कहना कि भारतीय खरोष्ठी पहले वहाँ थी उचित नहीं है क्योंकि खरोष्ठी लिपि का प्रयोग सबसे पहले अशोक कालीन भारत में ही मिलता है। उसके

बाद के युगों में यह मध्य एशियाई देशों में पायी जाती है। इससे सहज ही अनुमान कर सकते हैं कि यह लिपि भारत से पश्चिमी एशिया की ओर फैली।
4. खरोष्ठी लिपि में एक बौद्ध ग्रंथ 'धम्मपद' की पाण्डुलिपि चीनी तुर्किस्तान से प्राप्त हुई हैं इस संदर्भ में यह कह सकते हैं कि यदि खरोष्ठी विदेशी लिपि रही होती तो इसमें विदेशी ग्रंथ मिलते किन्तु इस लिपि में भारतीय ग्रंथों का मिलनां इस बात को सिद्ध करता है कि यह भारत की लिपि थी जिसका प्रयोग भारतीय ग्रंथों के रचना के लिए विदेशों में भी किया जाता था।[4]
5. इसमें अनुस्वार तथा संयुक्ताक्षरों का प्रयोग पाया जाता है। अनुस्वार का प्रयोग प्रधानतया भारतीय देन है तथा–संयुक्ताक्षेरों के भी प्रयोग की भारतीयों की अपनी विधि है। इन दोनों का अनुसरण भारतीय अन्य लिपियों के परिप्रेक्ष में खरोष्ठी द्वारा किया जाना इसके भारतीय उद्‌भव के संदेह का स्थान ही नहीं छोड़ता है।
6. यह लिपि भारत के पश्चिमी तथा पश्चिमोत्तर सीमा प्रदेशों में प्रचलित थी। वह भाग सदा बलाधिकारियों द्वारा आक्रान्त रहा। ये बलाधिकारी, जैसा इतिहास बताता है, मूलतः मध्य एशिया से ही होकर आये थे। अतः इनके साथ यह लिपि मध्य एशिया की ओर बढ़ी तथा इसने अपना एक क्षेत्र बना लिया द्य इसलिए इस लिपि का प्रयोग भारतीय सीमा में बसने वाले बलापहारी यूनानी, बख्त्री, शक, पह्व जाति के लोगों ने किया है। ईरानी मुहरों पर भी इस लिपि का अंकन इसी बात को स्पष्ट करता है कि इस मुद्रा का प्रचलन पश्चिमी भारत में था। चूँकि वहाँ की प्रचलित लिए खरोष्ठी थी इसी से वहाँ के सिक्कों पर इसका अंकन किया गया है।
7. चीनी विश्वकोष फा–वान–शु–लिन के अनुसार भारत की लिपियों में खरोष्ठी भी एक लिपि बताई गई हैं जो दाएँ से बाएँ ओर लिखी जाती है।
8. इस लिपि का जन्मदाता 'खरोष्ठ' नामक व्यक्ति माना जाता है। खरोष्ठ शब्द पूर्णतया भारतीय लगता है।
9. अगर यह विदेशी लिपि रहती तो भले ही भारत में इसका लेखन समाप्त हो जाता किन्तु पड़ोसी विदेश में तो चलता रहता। पर हम देखते हैं कि गुप्त साम्राज्य के समय व्यापक प्रचलन की लिपि ब्राह्मी को ही एक मात्र प्रश्रय मिला जिससे खरोष्ठी का चलन बन्द हो गया। इसके साथ ही, इसका कोई भी उल्लेख भारत के बाहर के देशों में व्यापक रूप से इसके चलन का नहीं मिलता।
10. (इस लिपि का सम्बन्ध बलापहारी शक्तियों के साथ होने तथा उनके द्वारा इसके उपयोग किये जाने का एक मात्र कारण यही प्रतीत होता है कि यह भारत के उस क्षेत्र में प्रचलित थी जो विदेशी बलापहारियों के अधीन बहुत दिनों तक बनी रही।[5]

निष्कर्ष

खरोष्ठी लिपि का उद्‌भव और विकास भारत में हुआ और समय के साथ इसकी उपयोगिता समाप्त हो जाने के कारण यह उपयोग में नही रह गयी और धीरे–धीरे इसका अस्तित्व समाप्त हो गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सहाय, डॉ शिव सहाय भारतीय पुरालेखों का अध्ययन भारतीय पुरालिपि शास्त्र, प्रकाशक मोतीलाल बनारसीदास, बनारस–2008, पृष्ठ 23
2. भारतीय पूरालिपि शास्त्र पृ0 47
3. भारतीय पूरालिपि शास्त्र पृ0 37
4. सत्यदेव, अभिनव, भारतीय पुरातत्व के मूल तत्व, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या –2002, पृ0–115
5. सहाय, डॉ शिव सहाय भारतीय पुरालेखों का अध्ययन भारतीय पुरालिपि शास्त्र, प्रकाशक मोतीलाल बनारसीदास, बनारस–2008, पृष्ठ 27